अध्याय 1

भाषा, वर्ण और वर्तनी

आज की भागती-दौड़ती जिंदगी में हर व्यक्ति अपने कल को बेहतर बनाने की होड़ में लगा हुआ है। हर किसी के मन में अपने भविष्य को सुनहरा बनाने की चाह है। यही चाह कहीं न कहीं व्यक्ति को तनावग्रस्त भी बना देती है। ऐसे में बीमा-पॉलिसी भविष्य के प्रति आश्वस्त कर उसे राहत प्रदान करती है।

टी॰वी॰, पत्रिकाओं एवं अखबार आदि में दिखाए जाने वाले बीमा संबंधी विज्ञापनों की भाषा आपने देखी ही होगी। वह इतनी प्रभावी एवं प्रेरणादायक होती है कि ग्राहक के मस्तिष्क पर एक छाप छोड़ती हुई उसे अपनी पॉलिसी की ओर आकर्षित करती है, जैसे - 'जीते रहो', 'जीवन के साथ भी और जीवन के बाद भी', 'कल पर कंट्रोल' आदि ये सभी वाक्य ग्राहक में एक आशा का संचार करते हैं। एक सुरक्षित भविष्य का उसका सपना सच करने की उम्मीद जगाते हैं, उस पर एक प्रभाव छोड़ते हैं, जो एक सशक्त भाषा द्वारा ही संभव है। आपके लिए यह जानना रोचक होगा कि 'एस्कोलाइफ़' नामक बीमा कंपनी की सीईओ श्रीमती रितु नंदा का नाम, एक दिन में 17,000 पेंशन पॉलिसियों को बेचने के कारण 'गिनीस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में दर्ज़ है और यह सब संभव हो पाया है उनकी सशक्त व प्रभावी भाषा के बल पर।...तो देखा आपने, एक कुशल बीमा एजेंट बनने के लिए भाषा पर अधिकार होना कितना आवश्यक है!

बीमा एजेंट

- बीमा एजेंट ग्राहक में बीमा पॉलिसी के विभिन्न लाभों; जैसे आत्मनिर्भरता, सुरक्षा व चिंतामुक्त जीवन आदि के प्रति विश्वास उत्पन्न करता है।
- वह ग्राहक को उनकी आवश्यकता व ज़रूरत के अनुसार विभिन्न बीमा पॉलिसियों; जैसे जीवन बीमा, दुर्घटना बीमा, स्वास्थ्य बीमा आदि के चयन में सहायता प्रदान करता है।
- भविष्य में होने वाली किसी अप्रिय घटना अथवा जोखिम से ग्राहक को बचाने के लिए वह उन्हें अनेक उपयोगी वस्तुओं का बीमा करवाने का सुझाव भी देता है।

मयूर शेट्टी
बजाज एलाइंस के सीईओ

रितु नंदा
एस्कोलाइफ़ नामक बीमा कंपनी
की सीईओ

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

आप जानते हैं

भाषा अभिव्यक्ति का एक ऐसा माध्यम है जो किसी को भी आपका मित्र या शत्रु बना सकता है। इसीलिए कहा गया है - 'मधुर वचन हैं औषधि, कटुक वचन हैं तीर' या 'गुड़ न खिलाओ पर गुड़ जैसी बात तो करो'। इन सब सूक्तियों का यही अर्थ है कि हम अभिव्यक्ति के इस सशक्त माध्यम का अच्छे से अच्छा उपयोग करें। भाषा हर जगह एक जैसी नहीं होती - समय, स्थान, बोलने वाले और समझने वाले के आयु, वर्ग व शिक्षा के स्तर को देखकर इसका स्वरूप बदलता रहता है। आपको भी तो जीवन में बहुत से लोगों के साथ बातचीत करनी पड़ती है। आपकी भाषा भी घर में परिवार के सदस्यों के साथ, स्कूल में शिक्षकों के साथ, पार्टी में दोस्तों के साथ अलग-अलग तरह की होती है।...अब आप अपनी ही भाषा की विशेषता पर ध्यान दीजिए। सामने दिए चित्रों को देखिए और इन स्थानों में प्रयोग की जाने वाली भाषा के अंतर का वर्णन कीजिए।

परिवार

स्कूल

जानिए

भाषा-रूप

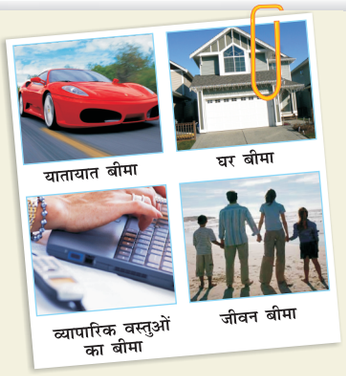

वास्तव में एक बीमा एजेंट का मुख्य गुण यही होता है कि बीमा पॉलिसी बेचते समय वह ग्राहक से इस प्रकार की भाषा में बात करे, जिससे उसके भीतर यह विश्वास पैदा हो सके कि अमुक पॉलिसी उसके लिए हितकारी है। साथ ही उसकी इस रूढ़िवादी सोच को बदलने की कोशिश करे कि चूंकि बीमा करवाई गई राशि व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात मिलती है, इसीलिए अपने किसी प्रियजन का बीमा करवाने का अर्थ है कि हम उसकी मृत्यु के अभिलाषी हैं। इस नकारात्मक भावना को सकारात्मक सोच में बदलने का कार्य सक्षम भाषा द्वारा ही किया जा सकता है।... आइए, अब इसी संदर्भ में भाषा के अलग रूपों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

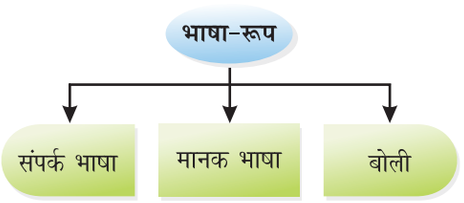

1 संपर्क भाषा

जिस साधारण भाषा में हम अपनी बात दूसरों को समझाते हैं या उनकी बात समझते हैं, वही हमारी 'संपर्क भाषा' कहलाती है। यह वह भाषा है, जो हमें समाज से जोड़ती है और सब के जीवन में हमारी जगह बनाती है। भारत एक विशाल देश है, जिसमें उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक अनेक भाषाओं और बोलियों को बोलने वाले लोग रहते हैं। इन सभी भाषाओं व बोलियों को बोलना या समझना एकदम असंभव है, इसलिए हमें एक ऐसी सामान्य भाषा

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

की आवश्यकता है, जो सभी लोग थोड़ा-बहुत समझ या बोल सकें। आज हमारे देश में संपर्क की यह भाषा साधारण हिंदी है, जिसमें उर्दू व अंग्रेजी भाषा के भी कुछ शब्द भी सम्मिलित हैं। इस भाषा के माध्यम से हम देश के किसी भी कोने में रहने वाले व्यक्ति से संपर्क कर सकते हैं।

संपर्क भाषा

2 मानक भाषा

जब हम समाज में औपचारिक रूप से व्यवहार करते हैं अर्थात कहीं भाषण देते हैं, पढ़ाते हैं, रेडियो, टी॰वी॰ आदि पर बोलते हैं, सभ्य और शिक्षित समाज के सामने बात करते हैं, पुस्तक या पत्र-पत्रिकाओं में लिखते हैं, तो हम एक विशेष स्तर की भाषा का प्रयोग करते हैं। यह भाषा 'मानक भाषा' कहलाती है। यह सभ्य और पढ़े-लिखे लोगों की भाषा मानी जाती है। देश और समाज के लिए नीतियाँ और नियम बनाना ऐसी ही भाषा में संभव हो सकता है, जो स्पष्ट हो और जिसमें सब कुछ सहजता से बताया जा सके व जिसका कोई दूसरा अर्थ भी न निकाला जा सकता हो। ऐसी ही भाषा 'मानक भाषा' कहलाती है। वैसे तो समय-समय पर मानक भाषा में भी परिवर्तन आता है, पर वह बहुत शीघ्र नहीं होता। प्रायः मानक भाषा का स्वरूप बहुत समय तक स्थिर रहता है।

मानक भाषा

3 बोली

भारत का क्षेत्रफल बहुत बड़ा है। दूर-दूर के क्षेत्रों में लोग रहते हैं...सभी लोग शिक्षित भी नहीं हैं, उनकी भाषा 'बोली' कहलाती है। दूसरे शब्दों में भाषा का क्षेत्रीय रूप 'बोली' कहलाता है। क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा का रूप कम बदलता है। प्रायः ऐसी भाषा में साहित्य रचनाएँ कम होती है। भारत में हिंदी की अनेक बोलियाँ हैं, जिनमें क्षेत्रीय भाषा के शब्द हैं और वे एक-दूसरे से काफी मिलती-जुलती हैं। भोजपुरी, ब्रजभाषा, बुंदेलखंडी, अवधी, मारवाड़ी और छत्तीसगढ़ी आदि हिंदी की ही अनेक बोलियाँ हैं। टी॰वी॰ पर प्रस्तुत होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में इन बोलियों का प्रयोग देखा जा सकता है।

टी.वी. सीरियल में बुंदेलखंडी बोली का प्रयोग

क्या आप जानते हैं कि दुनिया में 2,700 भाषाएँ बोली जाती हैं! इनमें सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है चीनी भाषा - मेंडेरिन।

कीजिए

तीन-तीन के समूह में बँट जाइए। एक समूह आदिवासी गाँव की सैर की कल्पना करके अपने अनुभव लिखे। दूसरा किसी वृद्धाश्रम की सैर के अनुभव लिखे और तीसरा अपने किसी मित्र के स्कूल के अनुभवों को लिखे। अंत में सभी समूह आपस में भाषा के अंतर के विषय में चर्चा करें।

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

जानिए

वर्ण

रितु नंदा

'बीमा' शब्द फारसी से आया है, जिसका भावार्थ है - जिम्मेदारी लेना। यह एक प्रकार का अनुबंध है, जिसका व्यापक अर्थ है कि बीमापत्र में वर्णित घटना के घटित होने पर बीमा कंपनी एक निश्चित धनराशि बीमा कराने वाले व्यक्ति को प्रदान करती है। बीमा कंपनी और ग्राहक के मध्य की कड़ी होता है बीमा एजेंट। तो देखा आपने बीमा एजेंट का काम कितना ज़िम्मेदारी भरा होता है। बराबर आठ वर्ष तक 'श्रेष्ठ बीमा एजेंट' का पुरस्कार पाने वाली श्रीमती नंदा भी अपनी लगन, मेहनत और भाषा की सही पकड़ के आधार पर ही बीमा क्षेत्र में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ पाई।...आइए, अब आगे भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण के विषय में जानते हैं जिसे स्वर और व्यंजन दो भागों में बाँटा जाता है।

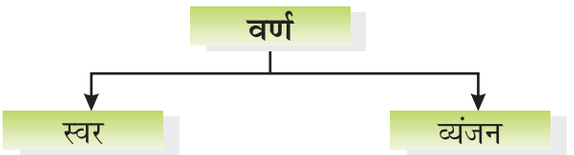

1. **स्वर** हमारी भाषा की वे ध्वनियाँ हैं, जिनका उच्चारण बिना किसी अन्य ध्वनि की सहायता के किया जा सकता है। यह संख्या में 11 हैं - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ। क्या आप जानते हैं कि स्वरों को, बोलने में लगने वाले समय के आधार पर बाँटा जाता है, ठीक उसी तरह जैसे बीमा पॉलिसी को समय-सीमा से जाना जाता है, कुछ बच्चों के बड़े होने तक, कोई उनकी शादी तक और कोई लोगों के बुढ़ापे तक। इसी तरह जिन स्वरों को बोलने में कम समय लगता है उन्हें ह्रस्व, जिनमें ह्रस्व से दुगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहा जाता है, व जिन स्वरों के उच्चारण में मूल स्वर से तिगुना समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं।

स्वर भेद	उदाहरण	
ह्रस्व	अ, इ, उ, ऋ	→ **ये चार वर्ण ह्रस्व स्वर हैं।**
दीर्घ	आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ	→ **ये सात वर्ण दीर्घ स्वर हैं।**
प्लुत	३ - (ओ३म्)	

आ और ओ के मध्य की ध्वनि ऑ को मिलाकर अब दीर्घ स्वर आठ हो गए हैं।

2. **व्यंजन** वे ध्वनियाँ हैं जिनका स्वतंत्र रूप से उच्चारण नहीं हो सकता और जिनके बोलने के लिए हमें स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। हिंदी में 33 व्यंजन हैं। 'क' से लेकर 'श्र' तक आए सभी व्यंजनों के तीन भेद किए जाते हैं, जो इस प्रकार हैं -

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

(क) **स्पर्श व्यंजन** – स्पर्श का अर्थ है छूना। जिन व्यंजनों के उच्चारण में एक उच्चारण स्थान दूसरे उच्चारण स्थान का स्पर्श करता है, उन्हें 'स्पर्श व्यंजन' कहते हैं। 'क्' से 'म्' तक सभी व्यंजन स्पर्श हैं। इन्हें निम्नलिखित पाँच वर्गों में बाँटा गया है -

वर्ग	व्यंजन					उच्चारण अवयव
क वर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	कंठ
च वर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	तालू[1]
ट वर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	मूर्धा[2]
त वर्ग	त्	थ्	द्	ध्	न्	दाँत
प वर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्	होंठ

(ख) **अंतस्थ व्यंजन** - अंतस्थ का अर्थ है - अंतः अर्थात बीच में, स्थ अर्थात स्थित होना। ये व्यंजन स्वरों और व्यंजनों के मध्य स्थित हैं, अतः इन्हें 'अंतस्थ व्यंजन' कहते हैं। इनका उच्चारण जिह्वा, तालु, दाँत और होठों के सहयोग से होता है। ये केवल चार हैं -

य्	र्	ल्	व्

(ग) **ऊष्म व्यंजन** - जिन वर्णों के उच्चारण के समय मुँह से गर्म श्वास वायु निकलती है, उन्हें 'ऊष्म व्यंजन' कहते हैं। ये भी संख्या में चार हैं -

श्	ष्	स्	ह्

उच्चारण के आधार पर व्यंजनों के भेद - जिस प्रकार स्वरों में ह्रस्व व दीर्घ ध्वनियाँ होती हैं, उसी प्रकार व्यंजनों में भी दो प्रकार की ध्वनियाँ होती हैं। जैसे -

(क) **अल्पप्राण** - जिनमें प्राण-शक्ति अर्थात श्वास कम चाहिए, उन्हें 'अल्पप्राण व्यंजन' कहा जाता है। हर वर्ग के प्रथम, तृतीय और पंचम व्यंजन अल्पप्राण हैं - क्, ग्, ङ्।

(ख) **महाप्राण** - जिनमें प्राण-शक्ति अर्थात श्वास अधिक चाहिए, उन्हें 'महाप्राण व्यंजन' कहा जाता है। हर वर्ग के द्वितीय व चतुर्थ व्यंजन महाप्राण हैं - ख्, घ्। ऊष्म व्यंजन भी महाप्राण कहलाते हैं।

1. तालू - मुख विवर में ऊपर गोलाकार छत है जिसके प्रारंभिक भाग को तालू कहा जाता है।
2. मूर्धा - मुख के भीतर तालू से ऊपर का भाग।

पिंकी - बताओ! स्वर और व्यंजन में क्या अंतर है?
रोहन - सिर्फ इतना ही कि स्वर मुँह से बाहर निकलते हैं और व्यंजन मुँह के अंदर जाते हैं।

कीजिए

दो समूहों में बँट जाइए। एक समूह अल्पप्राण ध्वनियों से शुरू होने वाले ऐसे शब्दों की सूची पढ़कर सुनाए जो प्रकृति से संबंधित हों। दूसरा समूह महाप्राण ध्वनियों से शुरू होने वाले ऐसे शब्दों की सूची सुनाए जो दैनिक व्यवहार के कार्यों से संबंधित हों। जो समूह अधिक से अधिक शब्द सुना सकेगा वही विजेता घोषित किया जाएगा। अंत में सभी अपनी कार्यपुस्तिका में इस क्रियाकलाप से सीखे गए दस-दस शब्द लिखें।

दैनिक व्यवहार

जानिए

वर्तनी

आप यह जान गए होंगे कि एक बीमा एजेंट के लिए भाषा का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। घरों में आपने देखा होगा कि आपके माता-पिता उसी व्यक्ति से बीमा करवाना पसंद करते हैं जिसकी बातचीत से वे प्रभावित होते हैं। टी॰ वी॰, समाचार-पत्रों आदि में भी बीमा से संबंधित विज्ञापन आपको देखने-पढ़ने को मिलते हैं। उनके द्वारा ग्राहकों को बीमा पॉलिसियों की विशेषताओं, लाभों आदि से परिचित कराया जाता है। इस सबके लिए यह ज़रूरी हो जाता कि भाषा के मौखिक व लिखित दोनों ही रूप शुद्ध, स्पष्ट व प्रभावशाली हो। भाषा का लिखित रूप क्योंकि वर्तनी पर आधारित होता है इसलिए भाषा में वर्तनी पर ध्यान देना अनिवार्य है।

भाषा का लिखित रूप वर्तनी (स्पैलिंग्स) पर आधारित है। भाषा के लिखित रूप में जब गलतियाँ होती हैं, तो उन्हें वर्तनी की अशुद्धियाँ कहा जाता है। हमारे लिए यह जानना ज़रूरी है कि हम यह त्रुटियाँ अथवा अशुद्धियाँ क्यों करते हैं? वर्तनी की अशुद्धि गलत लिखने से ही नहीं, बल्कि गलत बोलने के कारण भी होती है। यदि आप गलत बोलते हैं, तो निश्चित है कि आप गलत ही लिखेंगे।...जैसे जन्म से बहरे लोग गूँगे भी होते हैं, क्योंकि वह आवाज़ों से अपरिचित होते हैं। यही बात यहाँ भी दिखाई देती है।...इसलिए, आप सभी को शुद्ध उच्चारण पर ध्यान देना चाहिए। वर्तनी की अशुद्धियाँ कई प्रकार की हो सकती हैं। आइए, इन्हें क्रम से जानें -

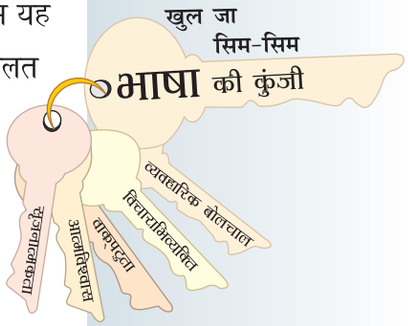

ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ स्वर का प्रयोग		दीर्घ के स्थान पर ह्रस्व स्वर का प्रयोग	
अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
साधू	साधु	शुन्य	शून्य
गुरू	गुरु	अहार	आहार

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

आयू	आयु
कवी	कवि

मुली	मूली
डाकु	डाकू

अल्पप्राण व महाप्राण की अस्पष्टता

अशुद्ध	शुद्ध
श्रेष्ट	श्रेष्ठ
मिष्टान	मिष्ठान
धही	दही
शरन	शरण

ऋ व र की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
रिषि	ऋषि
ग्रहस्थ	गृहस्थ
घ्रणा	घृणा
रिण	ऋण

ड़ व ढ़ की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
बूड़ा	बूढ़ा
टेड़ा	टेढ़ा
चिढ़िया	चिड़िया
पड़ाई	पढ़ाई

ज्ञ व ग्य की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
यग्य	यज्ञ
प्रतिग्या	प्रतिज्ञा
योज्ञ	योग्य
कृतग्य	कृतज्ञ

मिष्ठान

बूढ़ा

चिड़िया

कीजिए

चार समूहों में बँट जाइए। एक बड़ी टोकरी में अशुद्ध शब्दों की पर्चियाँ बनाकर डालिए। हर समूह से एक सदस्य आकर टोकरी में से दस पर्चियाँ उठाए। तत्पश्चात् समूह में लौटकर उन पर्चियों में लिखित अशुद्ध शब्दों की अशुद्धि पर चर्चा करे और उन्हें शुद्ध करे। जो समूह इस क्रियाकलाप को पहले पूरा करेगा, वही विजयी घोषित किया जाएगा। अंत में सभी विद्यार्थी कार्यपुस्तिका में दिए गए स्थान पर, अपने समूह द्वारा तैयार शुद्ध शब्दों को लिखें।

आपने जाना

- [ ] संपर्क भाषा वह भाषा है, जो सामान्य बातचीत के लिए बोली जाती है।
- [ ] मानक भाषा विशेष स्तर की भाषा होती है, जिसके स्वरूप में एकरूपता रहती है।
- [ ] बोली क्षेत्र-विशेष की वह भाषा है, जिसमें उस क्षेत्र व समाज की झलक होती है।
- [ ] स्वर स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं,जो ह्रस्व, दीर्घ या प्लुत होती हैं।
- [ ] व्यंजन स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं और दो प्रकार के होते हैं - अल्पप्राण व महाप्राण।
- [ ] सजगता से अशुद्धियाँ दूर की जा सकती हैं।

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

आओ, बात करें

http://blog.themillenniumschools.com

भाषा के कक्ष में आपका स्वागत है

वेब स्क्रीन 'भाषा-रूपों के लिए'

वेदांत - विनम्र! क्या तुम जानते हो उत्तर भारत की सभी भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा है, जो ग्रीक और लेटिन भाषाओं जितनी पुरानी है।

विनम्र - क्या सचमुच! क्या भारतीय संविधान की सभी 22 भाषाएँ संस्कृत से विकसित हुई हैं?

वेदांत - नहीं, संस्कृत भाषा आर्य जाति की भाषा है, जबकि दक्षिण भारत की भाषाएँ द्रविड़ जाति की भाषाएँ हैं और उनका उद्‌गम तमिल के प्राचीन रूप से हुआ है।

विनम्र - पर तमिल तो आजकल भी बोली जाती है।

वेदांत - हाँ! वह एक ऐसी प्राचीनतम भाषा है, जो आज भी जीवित है।...पर हमारी राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही है जिसका अनेक रूपों में व्यवहार होता है।

विनम्र - ...और वे रूप कौन-कौन से हैं?

वेदांत - संपर्क भाषा, मानक भाषा और बोली।

विनम्र - क्या तुम इन भाषा-रूपों के प्रयोग-क्षेत्रों के विषय में जानते हो?

वेदांत - हाँ! संपर्क भाषा का प्रयोग तो हम अपने मित्रों, प्रियजनों आदि से अनौपचारिक बातचीत के लिए करते हैं। मानक भाषा का प्रयोग स्कूल, कॉलेज आदि में औपचारिक व्यवहार के लिए करते हैं, जबकि बोली का प्रयोग किसी क्षेत्र विशेष में ही किया जाता है।

विनम्र - अरे वाह वेदांत! तुम्हारा भाषा ज्ञान तो बहुत अच्छा है।

वेदांत - आशा है, अब तो तुम्हारे भाषा ज्ञान में भी वृद्धि हुई होगी।

विनम्र - अब मैं भली-भाँति जान चुका हूँ कि रेडियो, टी॰वी॰ पर बोलते समय, पुस्तक या पत्र-पत्रिकाओं में लिखते समय हम भाषा के मानक रूप का प्रयोग करते हैं।

वेदांत - बिल्कुल सही!

विनम्र - फोन, इंटरनेट पर अपने मित्रों से बात करते समय या मोबाइल पर एस॰एम॰एस॰ लिखते समय हम संपर्क भाषा का प्रयोग करते हैं।

...ट्रिन ट्रिन...अरे वेदांत! मेरे दोस्त आकाश का फोन आ रहा है। मुझे उसके साथ क्रिकेट खेलने जाना है। बाकी की बातें बाद में करेंगे। बाय-बाय!

http://blog.themillenniumschools.com

B *I* U Shiva-Medium 15 pt

ठीक है विनम्र! फिर बात करते हैं। तुम मुझे

http://www.blog.themillenniumschools पर लॉग इन करना।

Send

Done

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. 'मानक भाषा' से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।
2. हमारे देश की 'संपर्क भाषा' क्या है और क्यों है? विस्तार से बताइए।
3. व्यंजन-भेदों के नाम बताइए।
4. भाषा की सबसे छोटी इकाई क्या कहलाती है? इसके दो भेदों के नाम बताइए।
5. स्वर व व्यंजन में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।
6. ह्रस्व व दीर्घ स्वरों का अंतर स्पष्ट कीजिए और दिए गए स्वरों में से दीर्घ स्वरों को छाँटिए।

   इ, आ, ओ, उ, ऐ, औ, ई, अ, ऊ

7. अल्पप्राण और महाप्राण का अंतर उदाहरण देकर समझाइए।
8. निम्नलिखित वाक्यों में सही कथनों पर सही(✓) का चिह्न लगाइए।

   (क) हिंदी में स्वरों की संख्या ग्यारह है। ☐
   (ख) स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है। ☐
   (ग) श्वास-वायु की मात्रा के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए गए हैं। ☐
   (घ) जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय प्राण-शक्ति अर्थात श्वास अधिक चाहिए, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहा जाता है। ☐
   (ङ) जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय प्राण-शक्ति अर्थात श्वास कम चाहिए, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहा जाता है। ☐

9. निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति उचित शब्दों द्वारा कीजिए।

   (क) दीर्घ स्वर _____ हैं।
   (ख) अ, इ, उ _____ स्वर हैं।
   (ग) हिंदी में _____ व्यंजन हैं।
   (घ) ख, घ _____ व्यंजन हैं।

10. वर्ण पढ़िए और सही शीर्षक तक रेखा खींचिए।

च्	अल्पप्राण	ढ़्
ज्	महाप्राण	भ्
य्		घ्

ल्		ठ्
प्		थ्
	अल्पप्राण	
ख्		ङ्
	महाप्राण	
क्		ग्
त्		द्

11. वर्तनी की अशुद्धियों के दो कारण बताइए।

12. ह्रस्व व दीर्घ और अल्पप्राण व महाप्राण की त्रुटियों के दो-दो उदाहरण दीजिए।

13. नीचे दी गई अशुद्धियों को शुद्ध कीजिए -

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
शक्ती		भक्ती	
सुरज		किरपा	
आयू		यग्य	
मरन		सढ़क	
मिरग		कढ़वा	
गुरू		रिषि	

14. नीचे भाषा के महत्व पर आधारित अपठित गद्यांश दिया गया है। अपठित शब्द का अर्थ है, जो इस समय आपने अपनी निर्धारित पाठ्य-पुस्तक में नहीं पढ़ा। पिछली कक्षा में आप अपठित गद्यांशों के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने का अभ्यास कर चुके हैं। उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए दिए गए अपठित गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

"किसी कवि ने कहा है -

कौआ किसका धन हर लेता, कोयल किसको दे देती है।
केवल मीठे बोल सुनाकर, बस में सबको कर लेती है॥

कौआ

कोयल

कवि की बात पूर्णतः सत्य है। मधुर वचन वास्तव में एक ऐसी औषधि के समान हैं, जिससे सभी को वश में किया जा सकता है। जब हम मधुर वाणी सुनते हैं, तो हमारा मन प्रसन्न हो उठता है। संत कबीरदास ने भी कहा है कि व्यक्ति को ऐसी वाणी बोलनी चाहिए, जो न केवल उसे स्वयं, बल्कि दूसरों के हृदय को भी आनंद से भर दे। वस्तुतः प्रेमपूर्वक कहे गए मधुर वचनों को सुनते ही हम वक्ता की हर बात मानने के लिए तैयार हो जाते हैं। व्यक्ति के

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया

बोलने मात्र से ही उसके व्यक्तित्व के विषय में पता चल जाता है। सज्जन हमेशा मधुर वाणी का प्रयोग करते हैं, जबकि दुर्जनों की वाणी कर्कश होती है। मधुर वाणी से रूठे हुए प्रियजनों को मनाया जा सकता है, बिगड़े कामों को बनाया जा सकता है, शत्रुओं को मित्र बनाया जा सकता है तथा सभी को मंत्र-मुग्ध किया जा सकता है। एक वाक्य में कहें तो असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। इसके विपरीत, कड़वे वचनों से मित्र भी शत्रु बन जाते हैं। व्यक्ति को कुछ बोलने से पहले अपने वचनों को हृदय के तराजू पर तोल लेना चाहिए अर्थात भली-भाँति मन में सोच-विचार करने के पश्चात ही बोलना चाहिए। शरीर पर लगे घाव का दर्द तो फिर भी कुछ समय बाद ठीक हो जाता है, किंतु किसी की अनजाने में भी कही गई कड़वी बात यदि एक बार मन में प्रवेश कर गई, तो वह रह-रहकर कष्ट पहुँचाती रहती है।

द्रौपदी द्वारा कहा गया एक कटु वाक्य 'अंधों के घर अंधे ही पैदा होते हैं' दुर्योधन के हृदय में इस प्रकार जाकर बैठ गया कि महाभारत के युद्ध का कारण बना। अतः व्यक्ति को सदैव सोच-समझकर बोलना चाहिए। जिसने भी अपनी वाणी को वश में करके मधुर वचनों का प्रयोग करना सीख लिया, मानो उसने सब कुछ पा लिया। आजकल बड़े-बड़े नेता भी वाणी के बल पर जनता को अपने पक्ष में कर लेते हैं। मधुर वचन में वह आकर्षण है, जो बिना रस्सी के ही सभी को बाँध लेता है अर्थात श्रोता के मन-मस्तिष्क को वश में कर लेता है।''

(क) सज्जन और दुर्जन प्राणियों की भाषा में क्या अंतर होता है?

(ख) मधुर वाणी क्या-क्या कार्य कर सकती है?

(ग) महाभारत के युद्ध का मुख्य कारण क्या था?

(घ) व्यक्ति को बोलने से पहले अपने वचनों को हृदय के तराजू पर क्यों तौल लेना चाहिए?

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश को उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

शिक्षार्थी हेतु

परियोजना कार्य – आप यह जान चुके हैं कि एक कुशल बीमा एजेंट बनने के लिए भाषा का शुद्ध, स्पष्ट व व्यावहारिक ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। बीमा एजेंट अपनी सशक्त व प्रभावपूर्ण भाषा के बल पर ही ग्राहक में बीमा पॉलिसी के लाभों के प्रति विश्वास उत्पन्न कर सकता है। अब आप सभी विद्यार्थी अपने शिक्षकों की सहायता से पास के स्कूल में जाएँ और वहाँ के विद्यार्थियों को अच्छी, प्रभावशाली और शुद्ध भाषा का प्रयोग करते हुए उच्चस्तरीय पढ़ाई के लिए ली जाने वाली बीमा योजनाओं के बारे में बताएँ। उनके लिए हिंदी में आवेदन भरें और ध्यान दें कि लेखन संबंधी कोई अशुद्धि न हो। हर विद्यार्थी कम-से-कम एक आवेदन पत्र अवश्य भरे। यदि कोई विद्यार्थी किसी मित्र को बीमा पॉलिसी लेने के लिए सहमत कर लेता है, तो शिक्षक इसकी सूचना किसी बीमा कंपनी को दें। पॉलिसी के लिए सहमत करने वाले विद्यार्थी को पुरस्कृत करें।

आवेदन पत्र भरना

आपकी दिशा

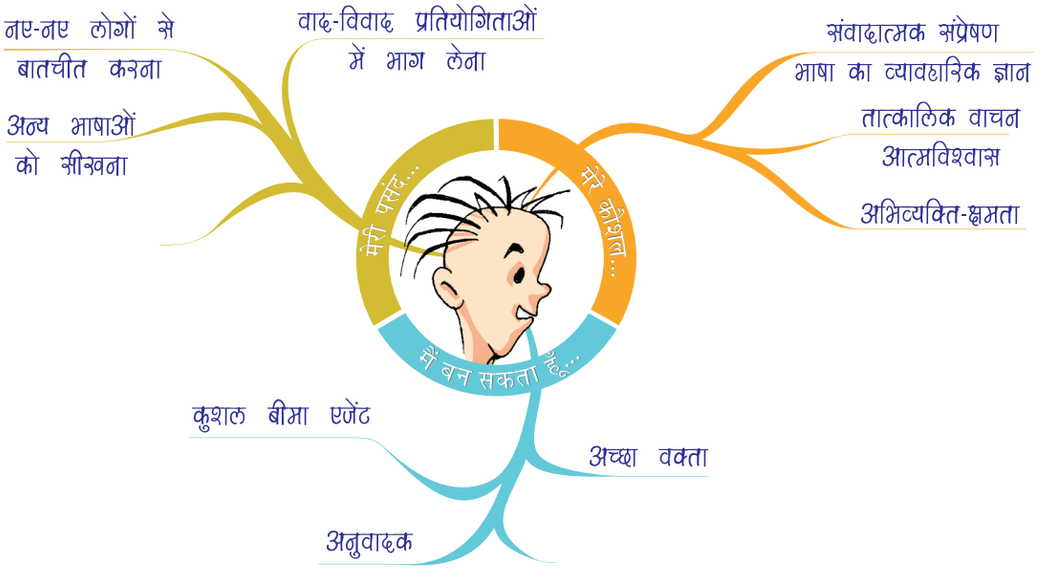

अधिक जानकारी के लिए करें क्लिक...क्लिक...क्लिक

भाषा के संदर्भ में आवश्यक इंटरनेट साइट्स :

hi.wikibooks.org/wiki/
http://vimisahitya.wordpress.com/vyakaran/

बीमा व्यवसाय के विषय में जानकारी हेतु आवश्यक इंटरनेट साइट्स :

careerplanning.about.com
http://financecareers.about.com

अनुवाद व उद्घोषक के विषय में जानकारी हेतु आवश्यक इंटरनेट साइट्स :

http://en.wikipedia.org/wiki/Translation
http://www.buzzle.com/editorials/4-30-2005-69333.asp

सहायक सामग्री – टोकरी, पर्चियाँ, शिक्षा संबंधी बीमा योजनाओं से संबंधित आवेदन-पत्र

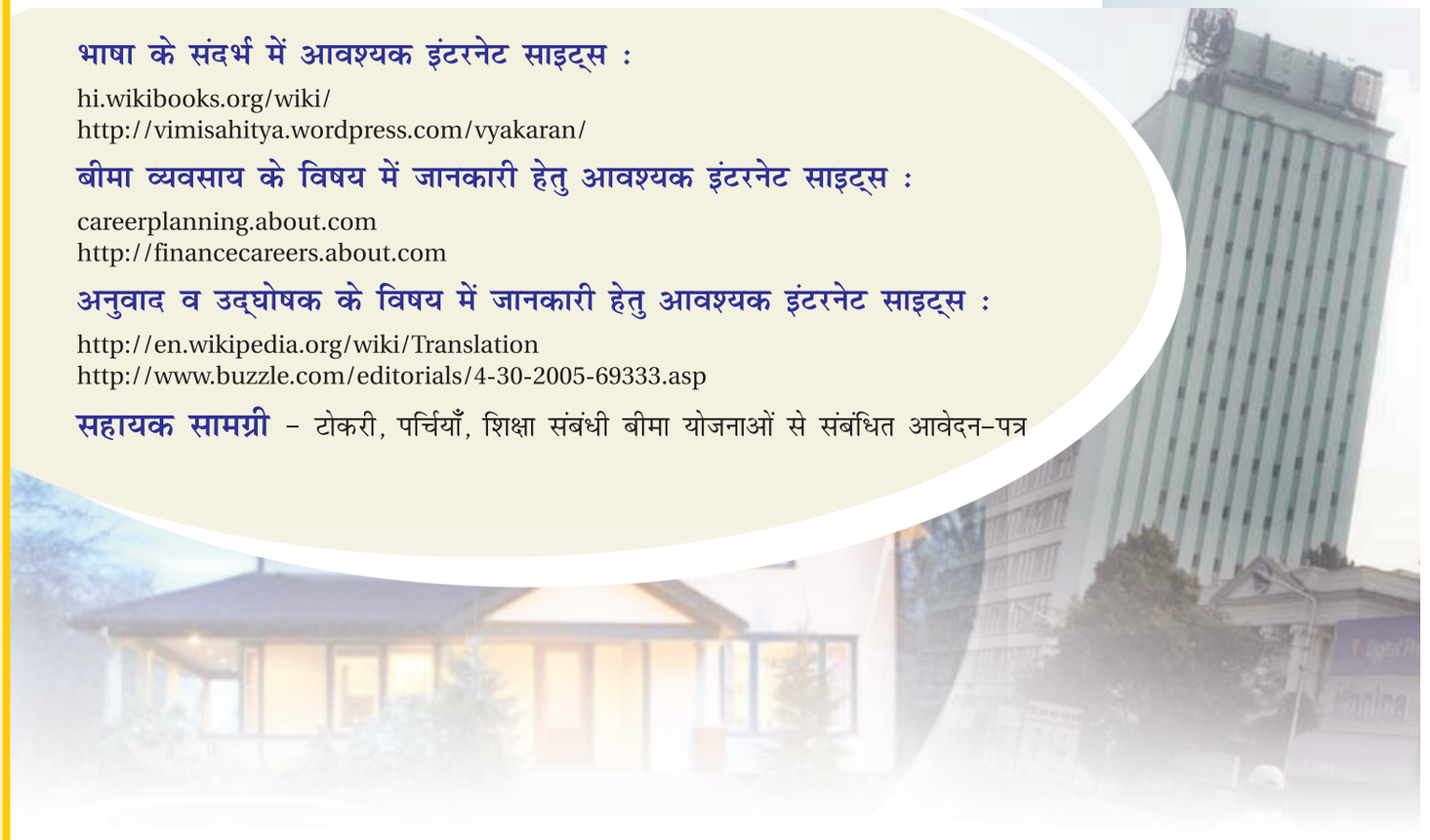

© एजुकेशन क्वालिटी फाउंडेशन ऑफ इंडिया